

पाँवटा तहसील में भूमि उपयोग का भौगोलिक अध्ययन



अशोक कुमार
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
हे०न०ब०ग० विश्वविद्यालय,
श्रीनगर

राकेश भूषण गोदियाल
असिस्टेंट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
हे०न०ब०ग० विश्वविद्यालय,
श्रीनगर

सारांश

भूमि उपयोग किसी भी राष्ट्र के विकास में अहम् भूमिका निभाता है। यह मानव के व्यवसाय के साथ-साथ उसकी प्रगति को भी इंगित करता है। भूमि उपयोग भौगोलिक अध्ययन का एक महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि भूमि एवं उपयोग दोनों ही अपने में अलग-अलग बातें हैं। मनुष्य प्राचीन काल से ही भूमि पर विभिन्न प्रकार के क्रियाकलाप करता आ रहा है तथा मनुष्य ने भूमि का उपयोग विभिन्न प्रयोजनों के आधार पर अलग-अलग रूप में किया है। भूमि का उपयोग मनुष्य द्वारा आर्थिक, सामाजिक या राजनैतिक उद्देश्यों को लेकर हो सकता है। भूमि उपयोग जनसमुदाय की आर्थिक क्षमता, तकनीकी स्तर एवं राजनैतिक शक्ति पर निर्भर होता है। भूमि उपयोग भूमि एवं मानव के अपनी अन्तर्क्रियाओं का परिणाम होती है क्योंकि दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। मनुष्य को प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए इस बहुमूल्य उपहार का समुचित प्रबन्ध करना आवश्यक है ताकि मनुष्य अपनी आने वाली पीढ़ियों को भी इसे सक्षम बनाये रखते हुए हस्तांतरित कर सके।

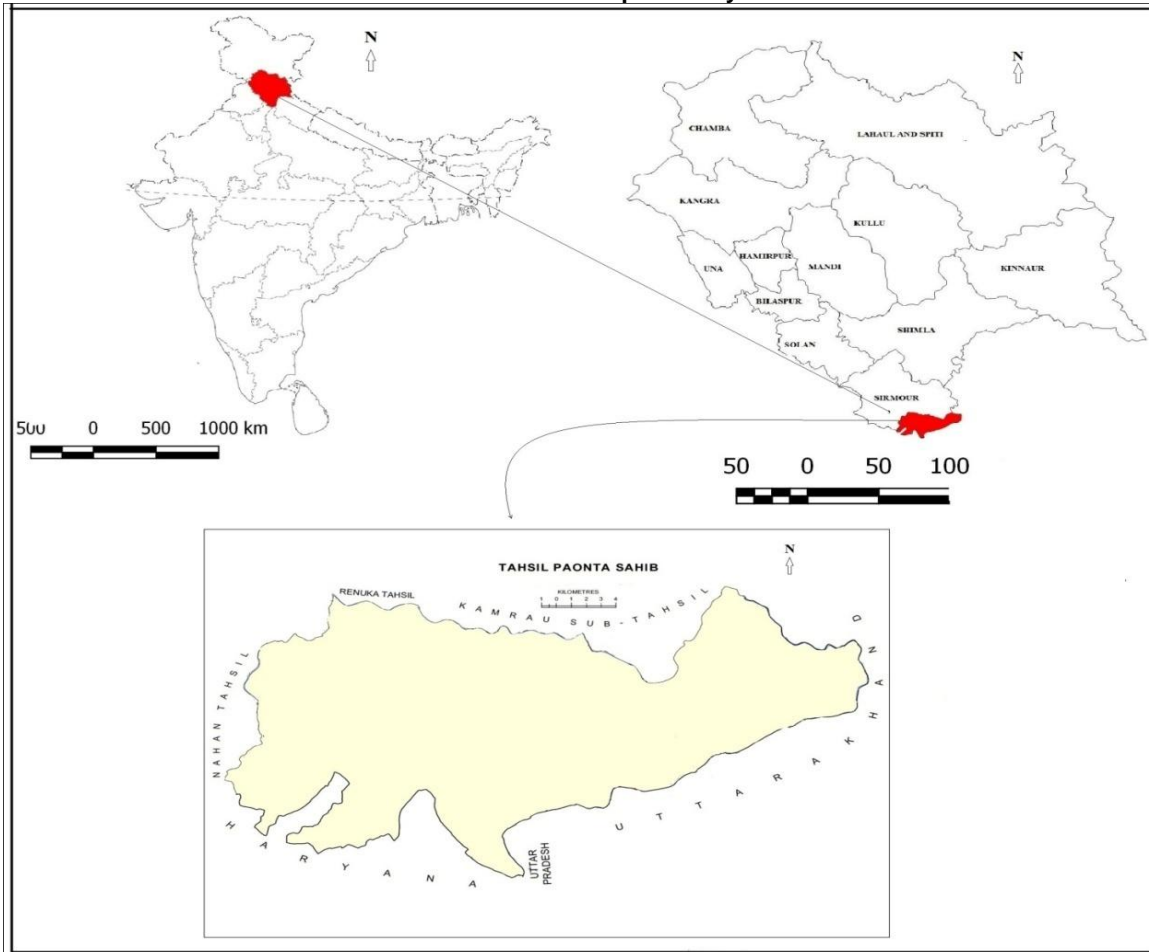
मुख्य शब्द : भूमि उपयोग, क्रियाकलाप, अन्तर्क्रियाओं।

प्रस्तावना

भूमि उपयोग का अर्थ मनुष्य द्वारा धरातल के विभिन्न रूपों में किए जाने वाले कार्यों से है। मुख्य रूप से भूमि का उपयोग फसलों के उत्पादन के लिए किया जाता है। भूमि ही मनुष्य की आधारभूत आवश्यकताओं को पूरा करती है। फसलों के उत्पादन के अतिरिक्त इसका उपयोग आवास, सड़क, मनोरंजन तथा व्यवसाय जैसी आर्थिक क्रियाओं के लिए भी होता है। किसी भी क्षेत्र की विकास प्रक्रिया जैसे-जैसे आगे बढ़ती है वैसे-वैसे ही भूमि की मांग बढ़ती है। कृषि की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए कृषि कार्यों में प्रयुक्त होने वाली भूमि को काटना पड़ता है जिससे कृषि भूमि गैर कृषि कार्यों में प्रयुक्त होने लगती है। इस प्रक्रिया से कृषि भूमि के विनाश के साथ-साथ कृषि पदार्थों की मांग एवं पूर्ति में गम्भीर असन्तुलन उत्पन्न हो सकते हैं। अतः यह आवश्यक है कि विकास के साथ-साथ जैसे-जैसे भूमि की मांग बढ़ती है उसके साथ ही बंजर एवं बेकार पड़ी भूमि को कृषि अथवा गैर कृषि कार्यों में प्रयुक्त करने के प्रयास करने चाहिए।

अध्ययन क्षेत्र

किसी भी देश व क्षेत्र की स्थिति उस देश के भूगोल को समझने की कुंजी है। भारत के उत्तर पश्चिम भाग में स्थित हिमाचल प्रदेश के दक्षिणी-पूर्वी भाग में पाँवटा साहिब तहसील स्थित है जिसका विस्तार 30° 20' उत्तरी अक्षांश से लेकर 30° 34' उत्तरी अक्षांश तथा 77° 24' पूर्वी देशांतर से लेकर 77° 49' पूर्वी देशांतर के मध्य है। यह तहसील सिरमौर जनपद का दक्षिणी पूर्वी भाग है। इसकी पूर्व से पश्चिम लम्बाई 42.42 किलोमीटर तथा उत्तर से दक्षिणी चौड़ाई 30.40 किलोमीटर है। इस तहसील की उत्तरी सीमा पर कमरऊ तहसील और श्री रेणुका जी, पश्चिमी सीमा पर नाहन तहसील स्थित है। इसकी पूर्वी सीमा उत्तराखण्ड राज्य के साथ है जिसकी लम्बाई 60.09 किलोमीटर है तथा दक्षिणी सीमा हरियाणा राज्य के साथ है जिसकी लम्बाई 43.72 किलोमीटर है। यमुना नदी इसकी सीमा उत्तराखण्ड राज्य के साथ बनाती है।

Location Map of Study Area**अध्ययन का उद्देश्य**

प्रस्तुत अध्ययन पाँवटा तहसील में भूमि उपयोग को लेकर किया जा रहा है। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से भूमि पर निर्भर करता है। इस अध्ययन के माध्यम से क्षेत्र में भूमि उपयोग का विश्लेषण किया गया है। इस शोध के माध्यम से योजनाओं को क्रियान्वयन कर रहे योजनाकारों को सुझाव देना है ताकि क्षेत्र में भूमि उपयोग को ध्यान में रखकर योजनाओं को क्रियान्वित किया जाए और क्षेत्र का भूमि उपयोग उचित ढंग से हो जिससे क्षेत्र का समुचित विकास हो सके। शोध कार्य के लिए निम्न उद्देश्य रखे गये हैं।

1. अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग की विभिन्न श्रेणियों का अध्ययन करना।
2. अध्ययन क्षेत्र में कम उपयोगिता वाले क्षेत्रों की पहचान करना।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोध पाँवटा तहसील की भूमि उपयोग को लेकर प्रथम बार किया जा रहा है। शोध क्षेत्र के भूमि उपयोग के बारे में भूगोल की पुस्तकों में बहुत कम पढ़ने को मिलता है। प्रो० माजिद हुसैन ने अपनी पुस्तक कृषि भूगोल (2010) में भूमि के गुणों के आधार पर भूमि का वर्गीकरण किया है। प्रो० मो० शफी ने अपनी कृति में भूमि

सर्वेक्षण को स्पष्ट किया है। प्रो० एस० सी० शर्मा (1991) ने तराई क्षेत्र में भूमि उपयोग सर्वेक्षण किया है। शहरीकरण ने प्राकृतिक संसाधनों के शोषण में वृद्धि की है, जिसके कारण भूमि उपयोग में परिवर्तन हो रहा है (विल्सन 2006, रिमल 2011)। प्रकाशम (2010) ने तमिलनाडु राज्य के कोडाईकनाल तालुका का 40 वर्षों का भूमि उपयोग परिवर्तन का अध्ययन किया है। जावेद एवं खान (2012) 2001 से लेकर 2010 तक खनन प्रक्रिया से होने वाले भूमि उपयोग परिवर्तन का अध्ययन करते हैं। भूमि उपयोग एवं जल के सम्बन्ध से हमे नदियों के जल की गुणवत्ता की पहचान करने में मदद मिलती है (डिंग एवं एट. एल. 2015)।

अन्वेषण विधि

प्रस्तुत शोध कार्य को करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों को प्राप्त करने के लिए अध्ययन क्षेत्र में सर्वेक्षण कार्य किया गया है और द्वितीयक आंकड़ों को शोध पत्रिका, किताबों और मृदा प्रयोगशाला से लिया गया है। मानचित्र के लिए Eradas 9.1 एवं Qgis 2.16 का प्रयोग किया गया है।

परिणाम

पाँवटा तहसील की भौगोलिक दशा मैदानों से भिन्न है। क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति पाँवटा-क्यारदा दून

में होने के कारण यहां पर काफी उपजाऊ भूमि है, जिसके कारण यहां पर भूमि का कुशलतम उपयोग किया जाता है। पहाड़ी भू-भागों में स्थित क्षेत्र की भूमि कृषि योग्य न होने के कारण कम उपयोग में लाई जाती है। क्षेत्र में पाई जाने वाली भूमि को उपयोग के दृष्टिकोण से निम्नवत श्रेणियों में विभाजित किया गया है।

वन भूमि

अध्ययन क्षेत्र की वनस्पति के वितरण में ऊंचाई के साथ-साथ ढाल की दिशा का भी विशेष महत्व है। क्षेत्र में सबसे अधिक वर्षा राजवन के आस-पास होने के कारण यहां पर सबसे सघन वन पाए जाते हैं। क्षेत्र में पाए जाने वाले वनों को चार रेन्ज में विभाजित किया गया है। क्षेत्र में वनों का क्षेत्रफल 28741.44 हे० है जो कि अध्ययन क्षेत्र का 56.46 प्रतिशत है। सबसे अधिक वन क्षेत्र पाँवटा रेन्ज का है जो 8665.15 हे० है तथा यह कुल वन क्षेत्र का 30.14 प्रतिशत भाग है। सबसे कम वन क्षेत्र भंगाणी रेन्ज के अन्तर्गत आता है जो कुल वन क्षेत्र का 19.74 प्रतिशत है। क्षेत्र में सरकारी वनों के अलावा कुछ निजी वन भी पाये जाते हैं। इनका कुल क्षेत्रफल 431 हे० है जिनमें सबसे अधिक वन माजरा पटवार वृत्त के अन्तर्गत आते हैं जिनका क्षेत्रफल 175 हे० है। क्षेत्र में विविध वृक्षों एवं झुण्डों के अधीन कुल रकबा 968 हे० है। इस भूमि के अन्तर्गत इंधन के काम आने वाले वृक्ष, छप्पर बनाने वाली घास, बांसों के झुण्ड तथा अन्य झाड़ियाँ आदि पाई जाती हैं।

क्र.स.	रेन्ज	वन क्षेत्र	प्रतिशत में
1	माजरा	5273.64	21.68%
2	पाँवटा साहिब	8665.15	30.14%
3	गिरीनगर	8169.890	28.42%
4	भंगाणी	5675	19.74%
5	कुल योग	28741.44	100

स्रोत— वन विभाग, कार्यालय पाँवटा साहिब।

बंजर भूमि**बंजर भूमि कृषि अयोग्य**

पाँवटा तहसील में कुल प्रतिवेदित क्षेत्र का 1205 हे० भाग इसके अन्तर्गत आता है। यह हिस्सा कुल भूमि का 5.43 प्रतिशत भाग है। पाँवटा तहसील का अधिकतर भाग पाँवटा-क्यारदा दून घाटी में स्थित है जिसके कारण यहां पर इस प्रकार की भूमि की कमी पाई जाती है।

बंजर भूमि कृषि योग्य

क्षेत्र में कृषि योग्य बंजर भूमि कुल प्रतिवेदित भूमि का 3.31: हिस्सा है जोकि काफी कम है। यहां पर सिंचाई की उचित व्यवस्था एवं उपजाऊ मृदा के कारण भूमि का कृषि कार्य में अच्छे से प्रयोग होता है

परती भूमि

तहसील में पाई जाने वाली परती भूमि को निम्न दो वर्गों में विभाजित किया गया है।

नवीन परती भूमि

अध्ययन क्षेत्र में नवीन परती भूमि कुल प्रतिवेदित भूमि का 2.97 प्रतिशत है। इस प्रकार की भूमि क्षेत्रफल के अनुसार सबसे अधिक कांडो कांसर पटवार वृत्त के अन्तर्गत पायी जाती है जोकि 115 हे० है, सबसे कम पुरुवाला पटवार वृत्त के अन्तर्गत है जोकि 9 हे० है।

पाँवटा तहसील का भूमि उपयोग

क्र.सं.	पटवार वृत्त का नाम	कुल क्षेत्र (हे०)	बंजर भूमि (हे०में)		परती भूमि		निजी वन क्षेत्र	विविध वृक्षों एवं झुण्डों के अधीन रकबा (हे०)	स्थायी चरान्द एवम् घासनियां (हे०)	कृषि भूमि उपयोग	
			कृषि अयोग्य	कृषि योग्य	नवीन परती	पुरानी परती				सकल कृषि भूमि उपयोग	शुद्ध कृषि भूमि उपयोग
1	अजौली	732	8	11	20	0	7	—	0	706	627
2	भंगाणी	1504	24	39	14	0	—	—	150	1291	918
3	भरोग बनेडी	1087	129	58	60	14	61	42	237	546	381
4	भाटावाली	1266	78	0	64	9	2	19	8	1150	651
5	धौलाकुआं	2511	59	6	68	4	—	397	0	2049	1269
6	गोरखवाला	1252	125	26	10	0	—	14	4	1027	921
7	कांडो कांसर	1734	315	76	115	14	130	134	233	832	373
8	माजरा	2026	24	61	21	7	175	6	21	1745	1262
9	पाँवटा साहिब	915	44	56	67	9	—	1	11	791	337
10	पुरुवाला	1231	8	9	9	0	—	6	0	1209	951
11	राजपुर	1085	31	87	50	6	50	16	242	653	533
12	शिवारुदाना	1488	8	84	32	2	—	259	666	478	335
13	शिवपुर	1628	275	41	54	0	—	—	22	1129	1053
14	टौरुभाईला	1477	41	129	38	0	4	74	577	643	450
15.	तारुवाला	867	33	37	28	0	2	—	2	801	631
16	टोकानगला	1354	3	15	10	0	—	—	0	1382	1105
	कुल योग	22157	1205	735	660	65	431	968	2173	16432	11775

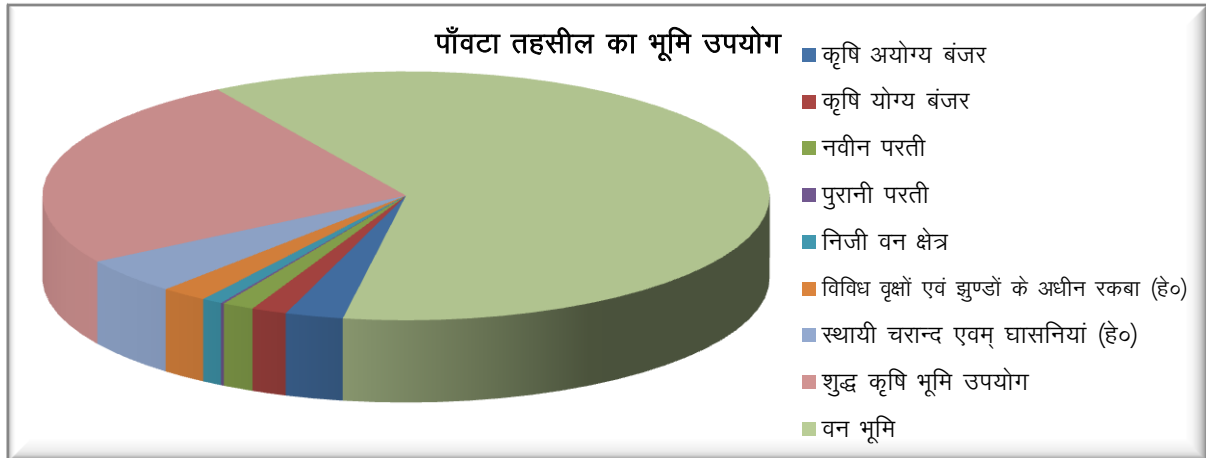
स्रोत— कुलयात पंजिका।

पुरानी परती भूमि

अध्ययन क्षेत्र में पुरानी परती भूमि 65 हे० में फैली हुई है। यह कुल प्रतिवेदित क्षेत्र का 0.29 प्रतिशत है जोकि काफी कम है। है। इस प्रकार की भूमि की 1 प्रतिशत से अधिक मात्रा केवल भरोग बनेड़ी पटवार वृत् के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्रों में ही पाई जाती है जिसका क्षेत्रफल 14 हे० है।

स्थायी चरान्द एवम् घासनियां

अध्ययन क्षेत्र में स्थायी चरागाह एवम् घासनियां के अधीन 2173 हे० रकबा है जोकि गांव के अभिलेख के अनुसार कुल भूमि का 9.80 प्रतिशत हिस्सा है। अध्ययन क्षेत्र में सबसे अधिक चरागाह एवं घासनियां शिवारूदाना पटवार वृत् के अन्तर्गत पाई जाती है जोकि 666 हे० में फैली हुई है। सबसे कम क्षेत्रफल अजौली, धौलाकुआं, पुरुवाला, टोकानगला पटवार वृत् के अन्तर्गत पाया जाता है जहां पर यह 0 प्रतिशत है।

**सकल कृषि भूमि उपयोग**

क्षेत्र में सकल कृषि भूमि के अन्तर्गत 16362 हे० क्षेत्रफल शामिल है जो कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल का 73.84 प्रतिशत है। पाँवटा-क्यारदा दून में बसे क्षेत्रों का सकल कृषि भूमि उपयोग अधिक है क्योंकि यहां पर शहरीकरण, समतल सतह, औद्योगीकरण, सिंचाई की व्यवस्था जैसी सुविधाएं पायी जाती है। इनमें अजौली, भंगाणी, भाटावाली, धौलाकुआं, गोरखुवाला, माजरा, पाँवटा साहिब, पुरुवाला, तारुवाला, टोकानगला पटवार वृत् के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्रों में यह कुल भूमि का 80 प्रतिशत से अधिक है।

शुद्ध कृषि भूमि उपयोग

अध्ययन क्षेत्र में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 11775 हे० है जो कुल प्रतिवेदित भूमि का 53.14 प्रतिशत है। क्षेत्रफल के आधार पर सबसे अधिक बोया गया क्षेत्र धौलाकुआं पटवार वृत् के अन्तर्गत आता है जो 1262 हे० है जोकि इसके कुल क्षेत्र का 50.53 प्रतिशत है। सबसे कम क्षेत्रफल शिवारूदाना में है जो 335 हे० है। प्रतिशतता के आधार पर सबसे अधिक शुद्ध बोया गया क्षेत्र अजौली पटवार वृत् का 82.65 प्रतिशत है जबकि सबसे कम क्षेत्रफल कांडो कांसर में है जो इसके कुल क्षेत्र का 21.51 प्रतिशत है।

निष्कर्ष

पाँवटा तहसील में भूमि उपयोग के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि यहां पर समतल भागों में स्थित क्षेत्रों में भूमि का सर्वाधिक उपयोग कृषि व गैर कृषि कार्यों में हुआ है। अध्ययन क्षेत्र का 56.46 प्रतिशत क्षेत्र वनों के अधीन है। कुल प्रतिवेदित क्षेत्र का 8.75 प्रतिशत बंजर भूमि, 3.27 परती भूमि, 9.80 प्रतिशत स्थायी चरान्द व घासनियां, 73.84 प्रतिशत सकल कृषि भूमि, 53.14 प्रतिशत शुद्ध कृषि भूमि के अधीन है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Bushra. Praveen.(2017). *Monitoring and Assesment of Landslide from Agastamuni to Sonprayag. International Journal of Recent Research in Social Sciences and Humanities (IJRSSH), 4(2), pp. 92-118*
2. Ding, J., Jiang, J., Fu, L., Liu, Q., Peng, Q. & Kang, M. 2015. *Impacts of Land Use on Surface Water Quality in a Subtropical River Basin: A Case Study of the Dongjiang River Basin, Southeastern China. Journal Of Water, 7, 4427-4445.*
3. Javed, A., & Khan, I. (2012). *Land use/land cover change due to mining activities in Singrauli industrial belt, Madhya Pradesh using remote sensing and GIS. Journal of Environmental Research And Development Vol, 6(3A)*
4. Shafi, M. (1960), "Land Utilization in Eastern Uttar Pradesh", A.M.U. Press, Aligarh.
5. Sharma, S.C., "Land-use survey in Trai Tract", Concept Publishing Company, New Delhi.
6. Singh, Jasbir (1984) and S. S. Dhillon (1984), "Agricultural Geography", Tata McGraw Hill Pub. Co., New Delhi.
7. तिवारी, आर० सी० एवं सिंह, बी० एन० (1994), "कृषि भूगोल", प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
8. शर्मा, बी० एल० (1988), "कृषि भूगोल", साहित्य भवन, आगरा।
9. सिंह, उजागिर, (1978), "भारत का आर्थिक एवं प्रादेशिक भूगोल", उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
10. हुसैन, माजिद, " कृषि भूगोल", रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।